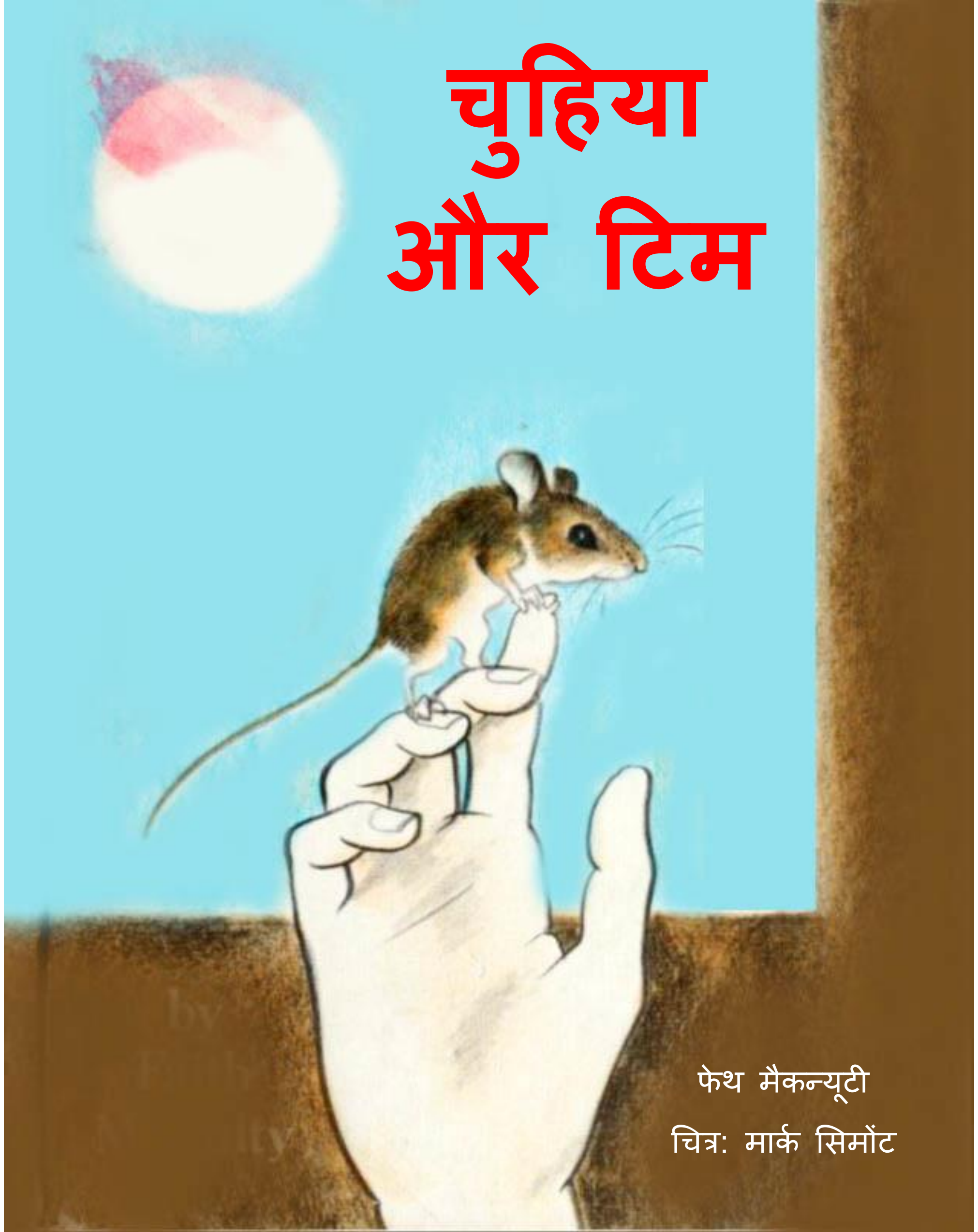
चुहिया और टिम

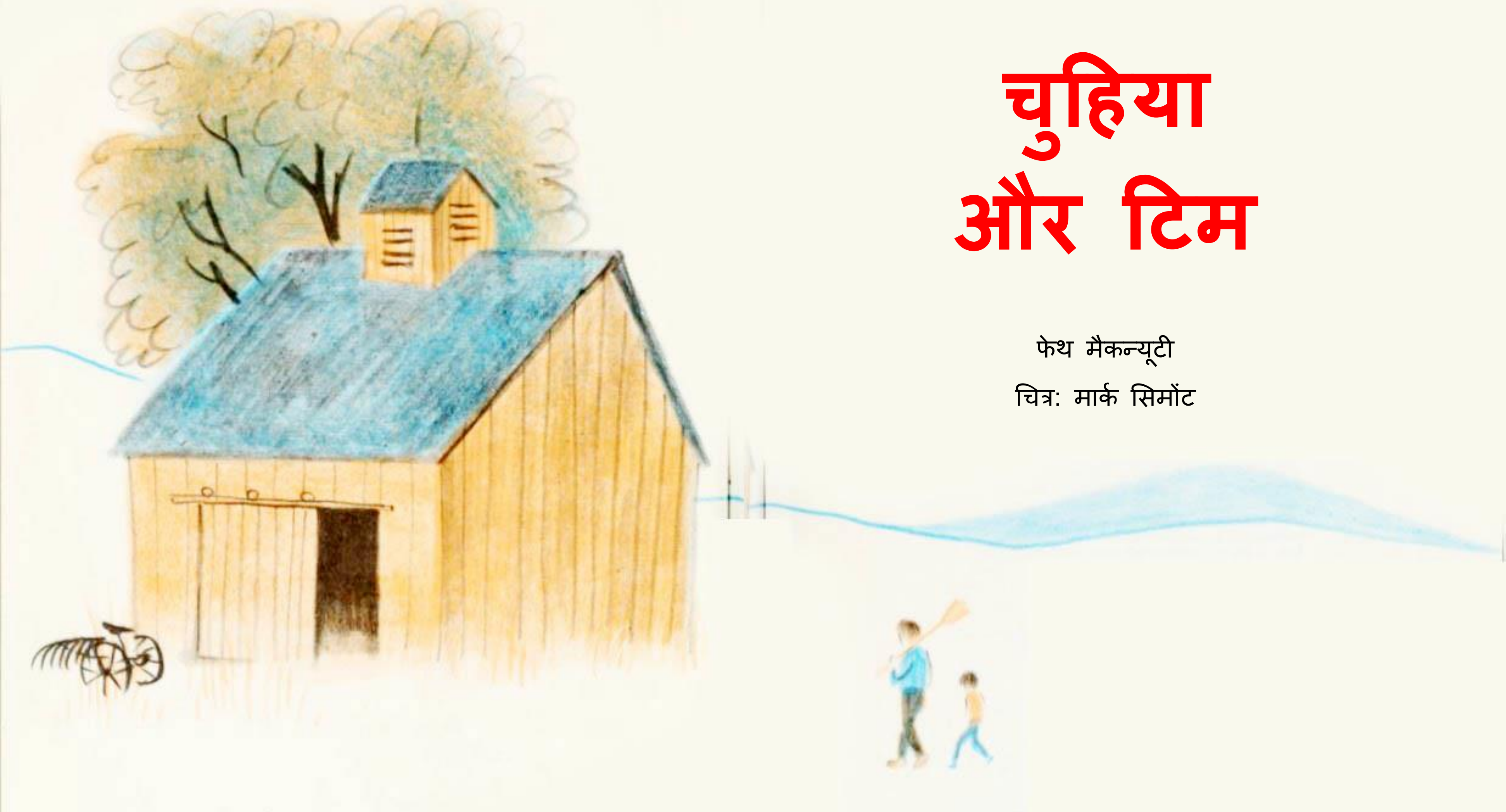


फेथ मैकन्यूटी
चित्र: मार्क सिमोंट

चुहिया और टिम

फेथ मैकन्यूटी

चित्र: मार्क सिमोंट







मैं टिम हूँ.

यह चुहिया की तस्वीर है.

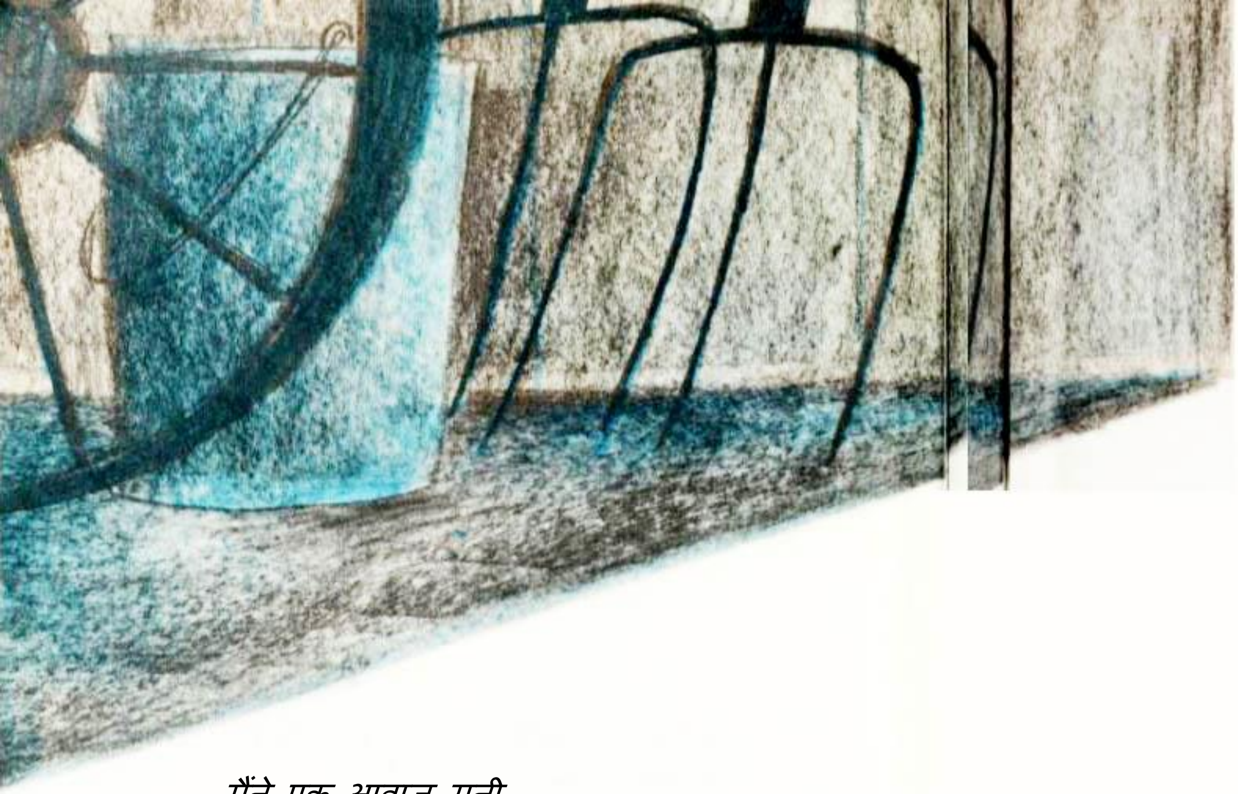
वो मेरी चुहिया थी.

कुछ समय तक वह मेरे साथ रही.



मैंने चुहिया को पिंजरे में रखा
लेकिन वो चुहिया जंगल में पैदा हुई थी.
वह एक हिरण चुहिया थी.
हिरण चूहे जंगल और खेतों में रहते हैं.
कभी-कभी वे पुराने खलिहानों में भी रहते हैं.
यहीं पर मुझे वो चुहिया मिली थी . . .
अपने खलिहान में.

मैं एक घोंसले में थी... गर्म और अंधेरा.
मैंने अपनी माँ के मुलायम फर को महसूस किया
और उसकी चुहिया की गंध को सूँघा.
जबकि मैं मीठा दूध चूस रही थी, तो उसकी जीभ ने मुझे चाटा.
अन्य छोटे चूहे मुझे धक्का दे रहे थे.
मैंने उनकी आवाज़ें सुनीं.
मैंने उनके दिलों की धड़कन महसूस की
जब हम एक गर्म ढेर में लेटे थे.



मैंने एक आवाज़ सुनी . . .

फुसफुसाहट . . फुसफुसाहट

आवाज़ तेज होती जा रही थी.

मेरी माँ चली गई थी.

घोंसला भी नहीं था

फिर मैंने एक तेज ठंडी रोशनी देखी....

मुझे अपने चारों ओर ठंड लग रही थी....

मैं घोसले की तलाश में भागी . . . .

अंधेरे में. . . . गर्म फर के लिए. . . .

लेकिन मैं अब और नहीं भाग सकती थी. . .

मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और चुपचाप लेटी रही.



फर्श पर मैंने एक छोटी चुहिया देखी
वो एक भौंरे से बड़ी नहीं था.
मैंने उसे उठा लिया.
मुझे लगा कि वह मर चुकी थी.
उसका सिलेटी फर, मखमल से भी महीन था.
उसके बड़े कान, लंबी मूंछें,
और छोटे हाथों जैसे पंजे थे.
वह इतनी छोटी और इतना बढ़िया थी
इसलिए मुझे अफ़सोस हुआ कि वह मर चुकी थी.

मुझे अपने नीचे और अपने चारों ओर गर्मी महसूस हुई.
मैंने हवा में एक अजीब, तेज़ गंध भी सूंघी.
मैंने महसूस किया कि ज़मीन हिल रही थी.



मैंने छोटी चुहिया को अपने दोनों हाथों में पकड़ा
फिर मैं उसे माँ और पिताजी को दिखाने के लिए दौड़ा.
मैंने अपना हाथ उठाया.
चुहिया जीवित थी!
उसकी आँखें खुली थीं.
उसके कान काँप रहे थे.
पिताजी ने कहा, "मैंने आज सुबह जब खलिहान साफ किया.
तो मैंने शायद मैंने कचरे के साथ
चूहों का घोंसला भी साफ कर दिया होगा."

मेरी जेब में एक मीठी गोली थी.
मैंने वो चुहिया के बगल में रख दी.
वे दोनों एक ही आकार के थे.
उसने बड़े-बड़े निवाले लिए. . . .
उसने बाघ की तरह खाया.
मुझे नहीं पता था कि इतना छोटा जानवर
इतना भूखा हो सकता है . . .
और जीने के लिए वो इतना कुछ कर सकता है.

मैंने एक तेज़, अच्छी गंध सूंघी.
मैंने मीठा, अजीबोगरीब सामान खाया
और फिर मैंने खुद को अंदर से गर्म महसूस किया.



मैंने ऊंची तेज़ आवाज़ें सुनीं.
मैंने बड़ी चीज़ों को हिलते हुए देखा.
मेरे नीचे एक गर्म गड्ढा था.
मैं झुकी
मेरा दिल बहुत तेज़ी से धड़क रहा था.
मैंने इंतज़ार किया.

मैंने कहा, "माँ, क्या मैं इसे रख सकता हूँ?"
माँ ने कहा, "कुछ दिनों के लिए.
जब तक यह जंगल में वापस जाने के
लिए पर्याप्त बड़ी न हो जाए."
मैंने चुहिया के लिए एक पिंजरा बनाया.
उसमें मैंने एक नारियल का खोल रखा
जिसका दरवाज़ा चुहिया के आकार का था
मैंने घोंसले में ऊन के टुकड़े रखे.

मैं एक नई जगह पर थी.
मैं भागी, मैंने सूँघा, मैंने चखा.
सब कुछ अजीब था.
फिर मुझे एक छेद मिला. . . . .
वो अंदर, से गर्म था.
वहाँ अंधेरा था और सुरक्षित था.
मैं सोने चली गई.





चुहिया बहुत सोती थी.
जब भी मैं नारियल का खोल उठाता
तो मैं उसे बिस्तर पर सोते हुए पाता था.
जब मैं उसे छूता तो वह खिंच जाती और जम्हाई लेती थी.
जब वह मेरे द्वारा लाए गए भोजन की गंध
सूंघती तो उसकी मूंछें काँप उठतीं थी.
जब मैं उसे सहलाता तो वह अपनी आँखें बंद कर लेती थी.
कभी-कभी वह मेरी उँगलियों को धीरे से कुतरती . . .
जिस तरह चूहे एक-दूसरे के फर को कुतरते हैं.





मैं अपने घोंसले में अकेली रहती थी.
सिवाय जब टिम आता था.
उसके हाथ गर्म और जीवंत थे.
वह स्वादिष्ट भोजन लाता था.
मुझे उसके हाथ पसंद आए.
मैंने उन्हें कुतरकर अच्छा महसूस किया.





चुहिया जल्द ही बड़ी हो गई.
कुछ ही हफ्तों में वो तीन-गुना बड़ी हो गई.
वह लाल भूरे रंग की हो गई.
सफेद पेट और सफेद मोजों के साथ.
वह बिल्ली की तरह अपनी जीभ से खुद को साफ़ करती थी.
उसने अपनी पूंछ को अपने पंजे में पकड़ा और उसे भी धोया.
वह सबसे सुंदर चुहिया थी जिसे आपने कभी देखा होगा.

कभी-कभी टिम के हाथ और मैं
नई जगहों की लंबी यात्राओं पर जाते थे.



चुहिया मेरी हथेली से कूदती थी.

फिर मैं उसे अपने बिस्तर पर ले जाता

और उसे वहां पर छोड़ देता था.

उसे खोजबीन करना बहुत पसंद था.

वह मेरी बांह पर चढ़ जाती.

वह मेरे कंधे पर बैठ जाती और मेरे कान को कुतरने लगती.

उसने मेरे बालों को भी चखा.

फिर वो मेरे पैर से नीचे भागी और मेरे जूतों के फीते खींचने लगी.

चुहिया, दुनिया की हर चीज के बारे में जानने को उत्सुक थी.

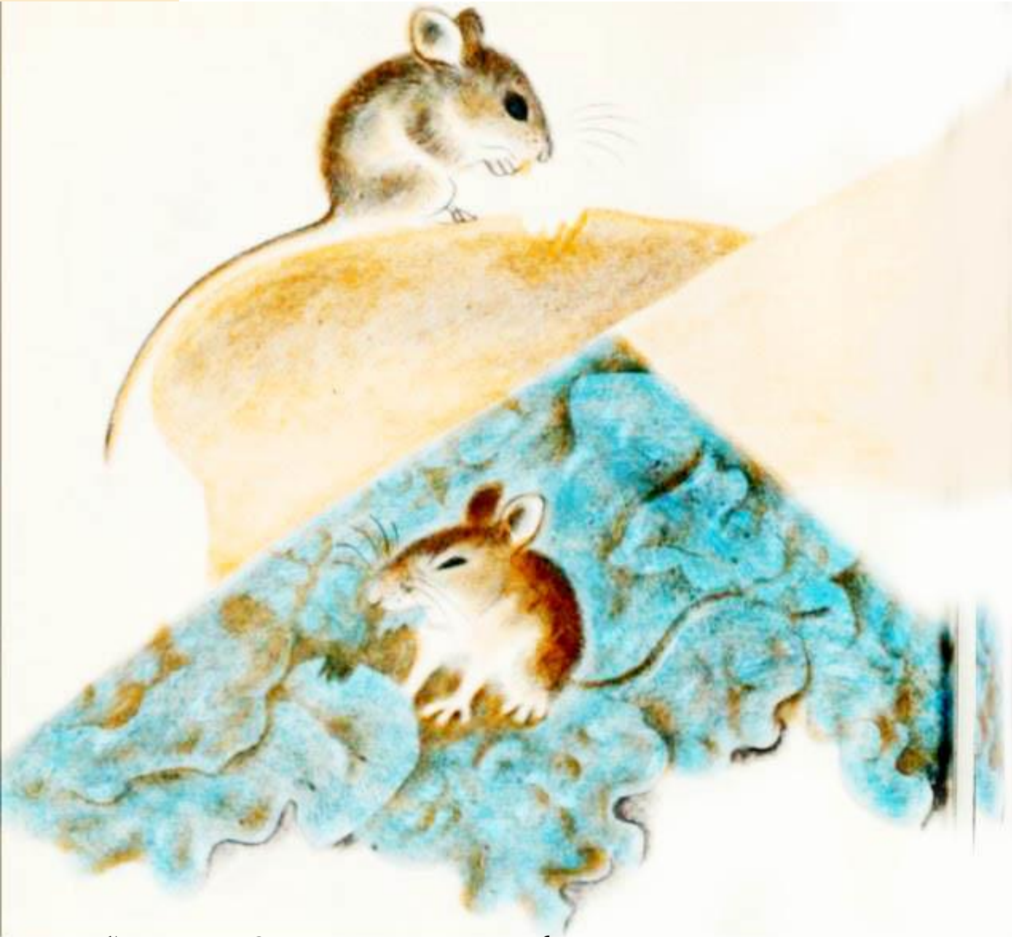


मैं पहाड़ों पर चढ़ जाती
और घाटियों में रेंगती रहती.
मैंने नए-नए खानों का स्वाद लिया
और नई गंधों को सूंघा.

कभी-कभी मैं बहुत दूर चली जाती और डर जाती थी.
लेकिन तभी टिम के हाथ मेरे पास आते.
मैं उनमें कूद जाती और खुद को
फिर से सुरक्षित महसूस करती.



मुझे चुहिया के साथ खेलना बहुत पसंद था.
मुझे आश्चर्य होता था कि वह मेरे बारे में क्या सोचती होगी.
एक ओर मैं इतना बड़ा था
कि वह मुझे एक बार में देख तक नहीं सकती थी,
लेकिन मुझे लगता था कि वह मुझे जानती थी.
जब मैंने उसे अपने हाथ में पकड़ता
तो हमारे बीच एक भावना का संचार होता था.
चुहिया बहुत होशियार थी.
मैं आश्चर्य करता था कि वह इतने छोटे दिमाग
के साथ इतना अच्छा कैसे सोच पाती होगी.
फिर मैंने सोचा: हमारी घड़ी एक फुट ऊँची है.
माँ की घड़ी एक सिक्के के आकार की है,
लेकिन दोनों ही घड़ियाँ सही समय बताती हैं.
मैं सोचता था कि कैसे चुहिया और मैं
एक ही चीज़ को अलग-अलग तरीकों से देखते होंगे.
एक बार मैंने चुहिया को रसोई की मेज़ पर रखा. . .





मैं एक स्वादिष्ट पहाड़ पर चढ़ गई

और मैंने एक निवाला खाया. . . .

मैं एक गहरे जंगल में भाग गई. ... वो कड़वा था. . . .

मैं बाहर भागी और वहां मुझे एक बड़ी, मीठी महक वाली चीज़ मिली.

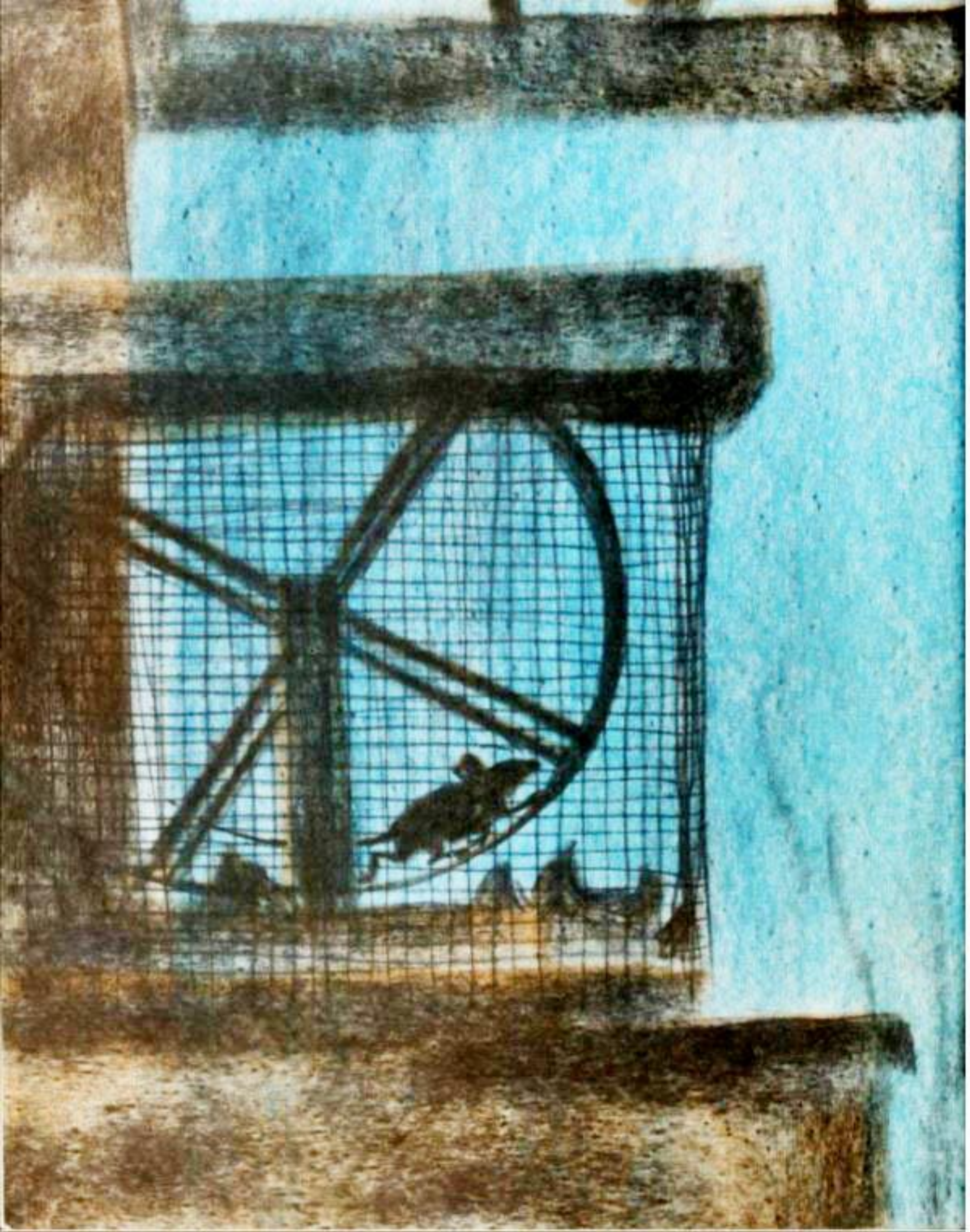
मैंने उसे चखने की कोशिश की, लेकिन यह चीज़ ही भाग गई. . . .

चुहिया ने सेब को काटने की कोशिश की.

वह बहुत बड़ा था. सेब लुढ़क गया.

मैंने सोचा: चूहा और मैं एक ही समय

में अलग-अलग दुनिया में रहते होंगे.



चुहिया को दौड़ना पसंद था.
मैंने चुहिया के लिए एक पहिया बनाया
और उसे उसके पिंजरे में डाल दिया.
जैसे ही वह उसपर दौड़ती पहिया घूमने लगता था.
मैंने उसका पिंजरा अपने बिस्तर के पास रखा.
कभी-कभी रात में मैं जाग जाता
और चुहिया के दौड़ने के दौरान
पहिये की चरमराहट को सुनता था.



अपने घर में सोते हुए यह सपना देखा.

मैंने सुरंगों से भागने का सपना देखा.

मैंने गंधों का सपना देखा –

भोजन की गंध, फर की गंध, चूहों की गंध.

मैंने ध्वनियों का सपना देखा -
सरसराहट, फुसफुसाहट, चीख़.

मैंने चूहों की आवाज़ों का सपना
देखा जो मैंने लंबे समय तक सुनीं.

फिर मैं जाग जाती

और दौड़ती और दौड़ती.

एक रात मैं जाग गया. वो एक चाँदनी थी.
मैंने चुहिया को बैठे हुए देखा.
मैंने उसकी आँखों को चमकते हुए देखा...
उसके कान काँप रहे थे...
उसने क्या देखा, क्या सुना और क्या सूँघा?

मैंने चांदनी रोशनी देखी.
मैंने परछाइयों को हिलते हुए देखा. मैंने टिम की साँसें सुनीं.
एक पतंगा फड़फड़ा रहा था. मैंने रात की हवा को सूँघा.
फिर मैंने एक अलग गंध सूँघी...एक चूहे की...मेरे करीब आते हुए.
टिम का बिस्तर चरमराया.
चूहे के पैर भाग गए.
मैं भी भागने लगी, मैं भागी और भागी. लेकिन कुछ नहीं मिला.

जब चुहिया अपने पहिये पर भाग रही थी
तो वह भला कहाँ जाने की कोशिश कर रही थी?



मुझे अप्रैल में चुहिया मिली थी.
अब अगस्त था.
माँ ने कहा, "चुहिया बड़ी हो गई है.
अब उसे जाने देने का समय आ गया है."
मैंने कहा, "वह मेरी चुहिया है.
मैं उसे रखना चाहता हूँ."
माँ ने पूछा, "क्या तुम अपना
पूरा जीवन पिंजरे में बिताना चाहोगे?"





गर्मी थी.

रात की हवा मीठी थी.

टिम नया खाना लाया.

मैंने तिपतिया घास और ब्लूबेरी खाई.

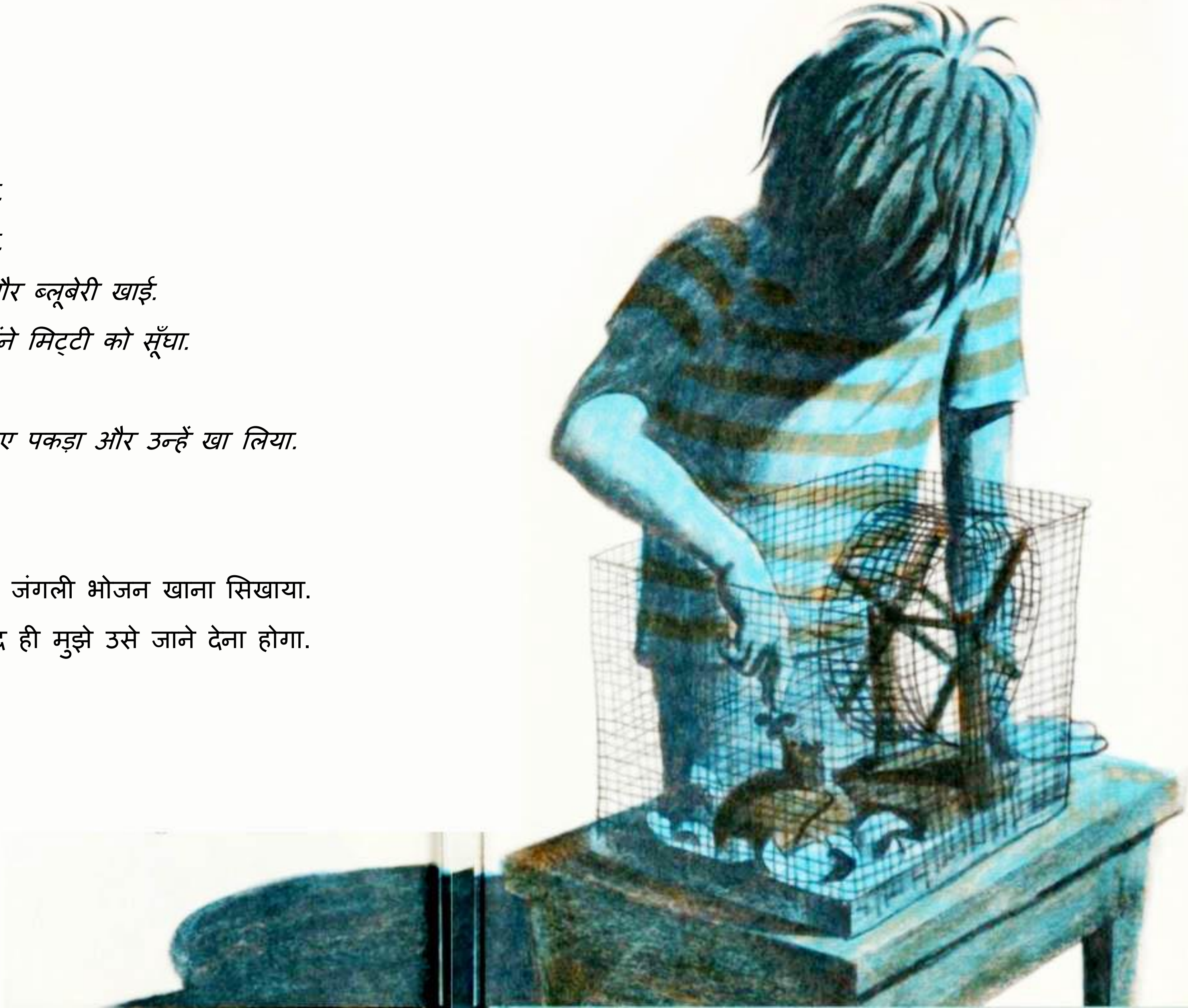
वह जड़ें लाया और मैंने मिट्टी को सूँघा.

वह पतंगे लाया.

मैंने उन्हें फड़फड़ाते हुए पकड़ा और उन्हें खा लिया.

मैंने अपनी चुहिया को जंगली भोजन खाना सिखाया.

मुझे पता था कि जल्द ही मुझे उसे जाने देना होगा.



वो दिन जल्द ही आया.
सूर्यास्त के समय मैं चुहिया को खलिहान में ले गया.
मैं एक लकड़ी के ढेर पर बैठ गया
और उसे अपने हाथ में पकड़ लिया.
मैंने उसे सहलाया.
अपनी उंगलियों से मैंने उसे बताया
कि मैं उससे प्यार करता हूँ—
मुझे उम्मीद है कि वह दुनिया में सुरक्षित रहेगी.

मैं टिम के हाथ में थी.
मुझे धूल, घास और पुरानी लकड़ी
की गंध आ रही थी.
मैंने उसके हाथ को कुतरा.



मैंने चुहिया को लकड़ी के ढेर पर रख दिया.
वह एक अंधेरे कोने में भाग गई. . . . .
मैं वहाँ से जाना नहीं चाहता था.
शाम के अंधेरे में मैं वहीं बैठा रहा
और सोचता रहा कि चुहिया क्या कर रही होगी.
क्या चुहिया आज़ाद होकर खुश होगी?



मैं भागी.

मुझे नई गंधों, नए रास्तों से चक्कर आ रहा था. . . .

मैं खो गई थी, मुझे डर लग रहा था.

मैं अपने पैरों के निशानों की गंध का पीछा करते हुए

टिम के पास वापिस गई.

मैं उसकी बगल में इंतज़ार करने लगी.

मैंने उसका हाथ बाहर निकालने का इंतज़ार किया.

मैं चाँद उगने तक वहीं रुका रहा.
चुहिया का कोई नामो-निशां नहीं था.
अब जाने का समय आ गया था.
मैंने कहा, "अलविदा, चुहिया. शुभकामनाएँ.
मुझे तुम्हारी याद आएगी, छोटी चुहिया."
और फिर मैं चला गया.

टिम एक बड़ी काली छाया में बदल गया.
फिर वो गायब हो गया.
मुझे नहीं पता था कि मुझे किस तरफ़ जाना है.
वहाँ पर बहुत सारी अजीब सुरंगें और रास्ते थे.
फिर मैंने एक आवाज़ सुनी—छोटी और दूर से—
वो मेरी जैसी ही आवाज़ थी.
मैं मीठी महक वाले अंधेरे में उसकी ओर भागी.

